The Research Dialogue
International Open Access, Peer Reviewed & Refereed Journal
An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 5 | Issue 3 | October 2026
ISSN: 2583-438X (Online)
Impact Factor: SJIF: 5.087, RPRI 4.79/6.69
Website: https://theresearchdialogue.com/

समकालीन सामाजिक परिप्रेक्ष्य में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कविता 'कुकुरमुत्ता' की प्रासंगिकता : एक आलोचनात्मक अध्ययन

डॉ. तबस्सुम खान
अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री सत्य साईं विश्वविद्यालय, सीहोर, मध्य प्रदेश

DOI: https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i3.25

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: 12-09-2026

Accepted: 18-10-2026

Published: 31-10-2026

Corresponding Author:
डॉ. वागीश दुबे

Keywords: सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, कुकुरमुत्ता, सामाजिक चेतना, आर्थिक विषमता, वर्ग-संघर्ष, व्यंग्य, पूँजीवाद, समकालीन प्रासंगिकता।

OPEN ACCESS

सारांश

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' आधुनिक हिंदी कविता के प्रमुख रचनाकारों में से एक हैं। उनकी कविता में सामाजिक चेतना, विद्रोह, मानवीय संवेदना, शोषण के प्रति प्रतिरोध तथा रूढ़ियों के विरुद्ध संघर्ष की भावना प्रमुखता से दिखाई देती है। उनकी प्रसिद्ध कविता 'कुकुरमुत्ता' हिंदी साहित्य में सामाजिक एवं आर्थिक विषमता पर व्यंग्य करने वाली महत्त्वपूर्ण रचना है। इस कविता के माध्यम से निराला ने सामाजिक प्रतिष्ठा, वर्गीय अहंकार, पूँजीवादी मानसिकता और स्थापित मान्यताओं पर प्रश्न उठाए हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य निराला की कविता 'कुकुरमुत्ता' का समकालीन सामाजिक परिप्रेक्ष्य में आलोचनात्मक अध्ययन करना है। वर्तमान समय में आर्थिक असमानता, उपभोक्तावादी संस्कृति, सामाजिक प्रतिष्ठा की प्रतिस्पर्धा तथा श्रम के मूल्यांकन से संबंधित अनेक प्रश्न विद्यमान हैं। ऐसे परिवेश में यह कविता विशेष प्रासंगिकता प्राप्त करती है। कविता का कुकुरमुत्ता अपने अस्तित्व और महत्त्व के आधार पर गुलाब जैसी प्रतिष्ठित वस्तु के सामने एक वैकल्पिक दृष्टि प्रस्तुत करता है। इसके माध्यम से निराला प्रकृति, सामाजिक व्यवस्था और मूल्यबोध से जुड़े प्रश्नों को व्यंग्यात्मक रूप में सामने लाते हैं। इस अध्ययन में पाठ-विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। शोध का प्रमुख उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि 'कुकुरमुत्ता' केवल अपने समय की सामाजिक विसंगतियों पर व्यंग्य नहीं करती, बल्कि आधुनिक समाज में प्रचलित वर्गीय भेदभाव, प्रतिष्ठा की मानसिकता और आर्थिक विषमता को समझने के लिए भी उपयोगी साहित्यिक आधार प्रदान करती है।

प्रस्तावना (Introduction)

हिंदी साहित्य का आधुनिक काल सामाजिक परिवर्तन, राष्ट्रीय जागरण और नवीन मानवीय चेतना के विकास का महत्त्वपूर्ण काल रहा है। इस युग के साहित्यकारों ने साहित्य को केवल सौंदर्य और मनोरंजन का माध्यम न मानकर सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति तथा परिवर्तन की चेतना का साधन बनाया। सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' इसी परंपरा के ऐसे रचनाकार हैं, जिन्होंने अपनी कविता के माध्यम से सामाजिक रूढ़ियों, शोषण, असमानता और अन्याय के विरुद्ध सशक्त स्वर उठाया।

निराला की साहित्यिक दृष्टि का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष उनकी विद्रोही चेतना है। वे परंपरागत मान्यताओं को आँख मूँदकर स्वीकार नहीं करते, बल्कि उनका परीक्षण मानवीय गरिमा, सामाजिक न्याय और स्वतंत्र विचार के आधार पर करते हैं। उनकी रचनाओं में समाज के उपेक्षित व्यक्तियों तथा वंचित वर्गों के प्रति संवेदनशीलता दिखाई देती है।

'कुकुरमुत्ता' निराला की ऐसी कविता है, जिसमें व्यंग्यात्मक शैली के माध्यम से सामाजिक प्रतिष्ठा, वर्गीय मानसिकता और स्थापित मूल्य-व्यवस्था पर प्रश्न उठाए गए हैं। कविता में गुलाब और कुकुरमुत्ता के प्रतीक विशेष महत्त्व रखते हैं। गुलाब को सामान्यतः सौंदर्य, अभिजात्यता और प्रतिष्ठा से जोड़ा जाता है, जबकि कुकुरमुत्ता सहज रूप से उगने वाले, उपेक्षित समझे जाने वाले अस्तित्व का प्रतिनिधित्व करता है।

निराला इन दोनों के माध्यम से मूल्यांकन की उस व्यवस्था पर व्यंग्य करते हैं, जिसमें किसी वस्तु या व्यक्ति की प्रतिष्ठा उसके वास्तविक गुणों के बजाय सामाजिक स्थिति और प्रचलित मान्यताओं से निर्धारित होती है।

वर्तमान समाज में आर्थिक संपन्नता, उपभोग, ब्रांड, सामाजिक प्रतिष्ठा और बाहरी प्रदर्शन को मिलने वाला महत्त्व इस कविता के अध्ययन को प्रासंगिक बनाता है। इसलिए 'कुकुरमुत्ता' का पुनर्पाठ आधुनिक सामाजिक संरचना और मूल्यबोध को समझने का अवसर प्रदान करता है।

शोध समस्या (Statement of the Problem)

समकालीन समाज में आर्थिक विकास और तकनीकी प्रगति के बावजूद सामाजिक एवं आर्थिक असमानता एक महत्त्वपूर्ण समस्या बनी हुई है। समाज में व्यक्ति की प्रतिष्ठा अनेक बार उसकी आर्थिक स्थिति, सामाजिक पृष्ठभूमि और उपभोग की क्षमता के आधार पर निर्धारित की जाती है।

ऐसी परिस्थितियों में श्रम, प्रतिभा और वास्तविक उपयोगिता की तुलना में बाहरी प्रतिष्ठा को अधिक महत्त्व दिए जाने की प्रवृत्ति दिखाई देती है।

निराला की कविता 'कुकुरमुत्ता' इस प्रकार की मूल्य-व्यवस्था पर व्यंग्यात्मक प्रश्न उठाती है। कविता में प्रस्तुत प्रतीकों के माध्यम से प्रतिष्ठा, सामाजिक विभाजन और महत्त्व निर्धारण की प्रचलित धारणाओं की आलोचना की जा सकती है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study)

प्रस्तुत शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की साहित्यिक एवं सामाजिक चेतना का अध्ययन करना।
2. कविता 'कुकुरमुत्ता' में प्रयुक्त प्रतीकों और व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति का विश्लेषण करना।
3. कविता में निहित वर्गीय मानसिकता और सामाजिक प्रतिष्ठा के प्रश्नों को स्पष्ट करना।
4. कविता के माध्यम से आर्थिक विषमता और सामाजिक मूल्यांकन की प्रक्रिया का अध्ययन करना।
5. समकालीन समाज में कविता की प्रासंगिकता का आलोचनात्मक परीक्षण करना।
6. निराला की कविता में निहित प्रतिरोध, स्वतंत्रता और सामाजिक परिवर्तन की चेतना को रेखांकित करना।

शोध-पद्धति (Research Methodology)

प्रस्तुत शोध-पत्र में मुख्यतः गुणात्मक, विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक शोध-पद्धति अपनाई गई है।

प्राथमिक स्रोत

- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कविता 'कुकुरमुत्ता' का प्रामाणिक पाठ।

द्वितीयक स्रोत

- निराला के काव्य पर आधारित आलोचनात्मक ग्रंथ।
- आधुनिक हिंदी कविता का इतिहास।
- हिंदी साहित्य में प्रगतिशील चेतना और सामाजिक यथार्थ से संबंधित अध्ययन।
- वर्ग-विषमता, आर्थिक असमानता और सामाजिक प्रतिष्ठा से संबंधित साहित्यिक आलोचना।

कविता के प्रतीकों, भाषा, व्यंग्य और वैचारिक संरचना का विश्लेषण करके उसकी समकालीन प्रासंगिकता को समझने का प्रयास किया गया है।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की साहित्यिक एवं सामाजिक चेतना

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हिंदी साहित्य के छायावादी युग के प्रमुख कवियों में गिने जाते हैं। उनकी रचनात्मकता में छायावादी संवेदना के साथ सामाजिक यथार्थ, विद्रोह और मानवीय स्वतंत्रता की चेतना भी विकसित होती दिखाई देती है।

निराला की कविता में व्यक्ति की स्वतंत्रता, सामाजिक रूढ़ियों का विरोध और शोषित वर्गों के प्रति संवेदनशीलता महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। उन्होंने साहित्यिक अभिव्यक्ति को परंपरागत सीमाओं से मुक्त करने का प्रयास किया।

उनकी रचनाओं में सामाजिक व्यवस्था की विसंगतियों को उजागर करने की प्रवृत्ति स्पष्ट है। वे ऐसी मान्यताओं पर प्रश्न उठाते हैं, जो व्यक्ति के मूल्यांकन को उसकी वास्तविक क्षमता के बजाय सामाजिक प्रतिष्ठा से जोड़ती हैं।

'कुकुरमुत्ता' इसी सामाजिक आलोचना का एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। कविता में व्यंग्य के माध्यम से प्रतिष्ठा और वास्तविक महत्त्व के बीच के अंतर को सामने लाया गया है।

निराला की सामाजिक चेतना की विशेषता यह है कि वे प्रत्यक्ष उपदेश देने के स्थान पर प्रतीकों, संवाद और व्यंग्य के माध्यम से पाठक को सोचने के लिए प्रेरित करते हैं।

'कुकुरमुत्ता' कविता का वैचारिक आधार

'कुकुरमुत्ता' निराला की प्रसिद्ध व्यंग्यात्मक कविता है। इसकी केंद्रीय संरचना में गुलाब और कुकुरमुत्ता के बीच का अंतर महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। गुलाब को सामान्यतः सौंदर्य, प्रतिष्ठा, अभिजात्यता और विशेष देखभाल से जोड़ा जाता है। इसके विपरीत, कुकुरमुत्ता सहज रूप से उगने वाला ऐसा पौधा है, जिसे प्रायः विशेष महत्त्व नहीं दिया जाता।

कविता इन दोनों प्रतीकों के माध्यम से सामाजिक प्रतिष्ठा और वास्तविक महत्त्व से जुड़े प्रश्नों को सामने लाती है।

यहाँ ध्यान देना आवश्यक है कि कविता का अर्थ केवल गुलाब और कुकुरमुत्ता के प्राकृतिक अंतर तक सीमित नहीं है। इन प्रतीकों के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था, वर्गीय मानसिकता और मूल्यांकन की प्रचलित पद्धतियों पर भी विचार किया जा सकता है।

कुकुरमुत्ता का स्वर आत्मविश्वास और व्यंग्य से युक्त है। वह स्वयं को कमतर मानने से इनकार करता है और अपनी उपयोगिता तथा अस्तित्व के आधार पर महत्त्व का दावा करता है।

इस प्रकार कविता का केंद्रीय प्रश्न यह बन जाता है कि किसी वस्तु या व्यक्ति का वास्तविक मूल्य कौन निर्धारित करता है—समाज की स्थापित प्रतिष्ठा-व्यवस्था या उसकी वास्तविक उपयोगिता और क्षमता?

यह प्रश्न वर्तमान समाज में भी महत्त्वपूर्ण है।

गुलाब और कुकुरमुत्ता : प्रतीकात्मक अर्थ

गुलाब का प्रतीकात्मक महत्त्व

कविता में गुलाब को अभिजात वर्ग, प्रतिष्ठा और विशेष संरक्षण से जोड़कर पढ़ा जा सकता है। गुलाब का सौंदर्य तथा उसकी देखभाल के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ उसे एक विशेष स्थान प्रदान करती हैं।

सामाजिक संदर्भ में यह प्रतीक उन वर्गों की ओर संकेत कर सकता है, जिन्हें संसाधनों, प्रतिष्ठा और सामाजिक मान्यता तक अपेक्षाकृत अधिक पहुँच प्राप्त होती है।

इस दृष्टि से गुलाब केवल एक पुष्प नहीं रह जाता, बल्कि वह ऐसी सामाजिक व्यवस्था का प्रतीक बन सकता है, जिसमें कुछ व्यक्तियों और वर्गों को उनकी स्थिति के कारण विशेष महत्त्व प्राप्त होता है।

कुकुरमुत्ता का प्रतीकात्मक महत्त्व

कुकुरमुत्ता सहज रूप से उगता है और सामान्यतः उसे गुलाब जैसी प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं होती। कविता में वह उपेक्षित समझे जाने वाले अस्तित्व के आत्मविश्वास का प्रतीक बनकर सामने आता है।

उसका स्वर सामाजिक मूल्यांकन की प्रचलित धारणाओं को चुनौती देता है। वह यह प्रश्न उठाता है कि प्रतिष्ठा के अभाव में किसी वस्तु की उपयोगिता या महत्त्व को अस्वीकार करना कहाँ तक उचित है।

समकालीन संदर्भ में कुकुरमुत्ता का प्रतीक उन लोगों के अनुभवों को समझने में सहायक हो सकता है, जिनकी प्रतिभा, श्रम या योगदान को सामाजिक प्रतिष्ठा के अभाव में पर्याप्त मान्यता नहीं मिलती।

दोनों प्रतीकों का अंतर्विरोध

गुलाब और कुकुरमुत्ता के बीच का अंतर कविता में व्यंग्य की प्रमुख आधारभूमि निर्मित करता है।

एक ओर गुलाब अपनी प्रतिष्ठा और सौंदर्य के कारण विशेष स्थान प्राप्त करता है, दूसरी ओर कुकुरमुत्ता अपने अस्तित्व और उपयोगिता के आधार पर उस प्रतिष्ठा-व्यवस्था को चुनौती देता है।

इस अंतर्विरोध के माध्यम से निराला पाठक को यह सोचने के लिए प्रेरित करते हैं कि सामाजिक प्रतिष्ठा और वास्तविक मूल्य हमेशा एक-दूसरे के समान नहीं होते।

कविता में वर्ग-विषमता और सामाजिक प्रतिष्ठा

'कुकुरमुत्ता' को वर्गीय मानसिकता की आलोचना के रूप में भी पढ़ा जा सकता है। समाज में आर्थिक स्थिति और सामाजिक प्रतिष्ठा अनेक बार व्यक्ति के महत्त्व को निर्धारित करने वाले प्रमुख आधार बन जाते हैं।

ऐसी व्यवस्था में संपन्न वर्ग को अधिक सम्मान प्राप्त हो सकता है, जबकि श्रम करने वाले अथवा आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के योगदान को पर्याप्त मान्यता नहीं मिलती।

कविता में गुलाब और कुकुरमुत्ता के बीच का प्रतीकात्मक अंतर इसी प्रकार के सामाजिक भेदभाव की ओर संकेत करता है।

निराला का व्यंग्य उस मानसिकता को चुनौती देता है, जिसमें किसी की प्रतिष्ठा को उसकी वास्तविक उपयोगिता से अधिक महत्त्व दिया जाता है।

वर्तमान समाज में यह प्रश्न शिक्षा, रोजगार, सांस्कृतिक संस्थानों और सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में देखा जा सकता है। आर्थिक संपन्नता के कारण मिलने वाली प्रतिष्ठा और वास्तविक श्रम से अर्जित योगदान के बीच का अंतर सामाजिक आलोचना का महत्त्वपूर्ण विषय है।

हालाँकि कविता को किसी एक सामाजिक सिद्धांत तक सीमित करना उचित नहीं होगा। इसका व्यंग्य प्रतिष्ठा, उपयोगिता और सामाजिक मान्यता के बीच के जटिल संबंधों की व्यापक आलोचना के रूप में भी समझा जा सकता है।

समकालीन सामाजिक संदर्भ में 'कुकुरमुत्ता' की प्रासंगिकता

आर्थिक असमानता

वर्तमान समाज में आर्थिक संसाधनों का असमान वितरण सामाजिक जीवन को प्रभावित करता है। आर्थिक रूप से संपन्न व्यक्तियों को अनेक क्षेत्रों में अधिक अवसर और प्रतिष्ठा प्राप्त हो सकती है, जबकि सीमित संसाधनों वाले लोगों को अपनी क्षमताओं को स्थापित करने के लिए अतिरिक्त संघर्ष करना पड़ता है।

'कुकुरमुत्ता' का अध्ययन इस प्रश्न को सामने लाता है कि समाज में प्रतिष्ठा का निर्धारण किन आधारों पर किया जाता है।

कविता की प्रतीकात्मक संरचना आर्थिक असमानता और सामाजिक मूल्यांकन के बीच संबंध पर विचार करने का अवसर प्रदान करती है।

उपभोक्तावादी संस्कृति

आधुनिक जीवन में वस्तुओं की कीमत, ब्रांड और बाजार में उनकी लोकप्रियता को विशेष महत्त्व दिया जाता है। अनेक बार वस्तु का वास्तविक उपयोग उसके बाजार-मूल्य और सामाजिक प्रतिष्ठा से पीछे रह जाता है।

'कुकुरमुत्ता' को इस संदर्भ में पढ़ने से वास्तविक उपयोगिता और सामाजिक प्रतिष्ठा के बीच का अंतर स्पष्ट किया जा सकता है।

कविता हमें यह विचार करने के लिए प्रेरित करती है कि क्या बाजार और समाज द्वारा निर्धारित मूल्य हमेशा किसी वस्तु या व्यक्ति के वास्तविक योगदान को सही ढंग से व्यक्त करते हैं।

इस प्रकार कविता का व्यंग्य उपभोक्तावादी संस्कृति की आलोचनात्मक समझ विकसित करने में उपयोगी हो सकता है।

श्रम का सम्मान

समाज में श्रम करने वाले व्यक्तियों का योगदान जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्त्वपूर्ण होता है। इसके बावजूद अनेक परिस्थितियों में श्रम की प्रतिष्ठा और श्रमिक की सामाजिक स्थिति के बीच अंतर दिखाई देता है।

'कुकुरमुत्ता' के माध्यम से इस प्रश्न पर विचार किया जा सकता है कि किसी व्यक्ति के कार्य का मूल्यांकन केवल उसकी सामाजिक स्थिति के आधार पर किया जाना चाहिए या उसके वास्तविक योगदान के आधार पर।

यह दृष्टिकोण श्रम के सम्मान, सामाजिक समानता और मानवीय गरिमा की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

सामाजिक प्रतिष्ठा की प्रतिस्पर्धा

वर्तमान समय में सामाजिक प्रतिष्ठा अनेक बार आर्थिक संपन्नता, बाहरी प्रदर्शन और सामाजिक मान्यता से जुड़ जाती है।

ऐसी परिस्थिति में व्यक्ति की वास्तविक प्रतिभा और गुणों की तुलना में उसकी सामाजिक छवि को अधिक महत्त्व दिया जा सकता है।

'कुकुरमुत्ता' इस मानसिकता पर व्यंग्य करने के लिए एक उपयोगी साहित्यिक आधार प्रदान करती है। कविता के माध्यम से यह प्रश्न उठाया जा सकता है कि प्रतिष्ठा का वास्तविक आधार क्या होना चाहिए।

कविता में व्यंग्य और प्रतिरोध की चेतना

व्यंग्य साहित्य की ऐसी विधा है, जिसके माध्यम से सामाजिक विसंगतियों, पाखंड और असमानताओं को प्रभावशाली ढंग से उजागर किया जाता है।

'कुकुरमुत्ता' में व्यंग्यात्मक स्वर कविता को विशिष्ट बनाता है। निराला स्थापित प्रतिष्ठा-व्यवस्था को सीधे उपदेश देकर नहीं, बल्कि प्रतीकों और आत्मविश्वासपूर्ण अभिव्यक्ति के माध्यम से चुनौती देते हैं।

कुकुरमुत्ता का स्वर उस उपेक्षित अस्तित्व की ओर संकेत करता है, जो सामाजिक मान्यता के अभाव में भी अपनी उपयोगिता और महत्त्व को पहचानता है।

इस प्रकार कविता में प्रतिरोध की चेतना केवल विरोध तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह वैकल्पिक मूल्यबोध की स्थापना का प्रयास भी करती है।

समकालीन समाज में जब सामाजिक प्रतिष्ठा, आर्थिक शक्ति और बाहरी प्रदर्शन को विशेष महत्त्व मिलता है, तब कविता का व्यंग्य पाठक को प्रचलित मान्यताओं की आलोचनात्मक समीक्षा करने के लिए प्रेरित करता है।

वर्तमान संदर्भ में कविता की सीमाएँ और आलोचनात्मक दृष्टि

किसी भी साहित्यिक रचना की वर्तमान प्रासंगिकता का मूल्यांकन करते समय उसके ऐतिहासिक संदर्भ और साहित्यिक संरचना को ध्यान में रखना आवश्यक है।

'कुकुरमुत्ता' अपने समय की सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक परिस्थितियों से जुड़ी कविता है। इसलिए उसके प्रत्येक प्रतीक को वर्तमान समाज की किसी एक संस्था या वर्ग से सीधे जोड़ना उचित नहीं होगा।

कविता के प्रतीकों के अनेक अर्थ संभव हैं। उनका विश्लेषण करते समय मूल पाठ, रचना की संरचना, व्यंग्यात्मक स्वर और उपलब्ध आलोचनात्मक अध्ययनों को ध्यान में रखना चाहिए।

समकालीन समाज से कविता का संबंध स्थापित करने का अर्थ यह नहीं है कि कविता वर्तमान आर्थिक व्यवस्था का प्रत्यक्ष विवरण प्रस्तुत करती है। बल्कि उसकी प्रासंगिकता इस तथ्य में है कि वह सामाजिक प्रतिष्ठा, उपयोगिता, असमानता और मूल्यांकन जैसे प्रश्नों पर विचार करने की प्रेरणा देती है। इस प्रकार कविता का आलोचनात्मक अध्ययन साहित्य और समाज के बीच संबंध को अधिक व्यापक रूप से समझने में सहायता करता है।

शोध के प्रमुख निष्कर्ष (Findings)

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष सामने आते हैं:

1. 'कुकुरमुत्ता' निराला की ऐसी कविता है, जिसमें व्यंग्य के माध्यम से सामाजिक प्रतिष्ठा और वास्तविक महत्त्व के बीच के अंतर को उजागर किया गया है।
2. गुलाब और कुकुरमुत्ता के प्रतीक कविता को व्यापक सामाजिक अर्थ प्रदान करते हैं।
3. कविता की वैचारिक संरचना वर्गीय मानसिकता, सामाजिक मान्यता और मूल्यांकन की प्रचलित धारणाओं की आलोचनात्मक समीक्षा का अवसर देती है।
4. वर्तमान समाज में आर्थिक असमानता और उपभोक्तावादी संस्कृति के अध्ययन के लिए कविता का पुनर्पाठ उपयोगी है।
5. कविता श्रम, उपयोगिता और सामाजिक प्रतिष्ठा के संबंधों पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है।
6. निराला की व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति पाठक को स्थापित सामाजिक मान्यताओं का आलोचनात्मक परीक्षण करने की प्रेरणा देती है।
7. कविता की समकालीन प्रासंगिकता उसके प्रतीकों को वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों के संदर्भ में विवेकपूर्ण ढंग से समझने पर निर्भर करती है।

निष्कर्ष (Conclusion)

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कविता 'कुकुरमुत्ता' हिंदी साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण व्यंग्यात्मक रचना है। इसमें सामाजिक प्रतिष्ठा, वर्गीय मानसिकता और मूल्यांकन की प्रचलित धारणाओं पर प्रश्न उठाए गए हैं। गुलाब और कुकुरमुत्ता के प्रतीकों के माध्यम से निराला ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि सामाजिक मान्यता और वास्तविक महत्त्व के बीच हमेशा समानता नहीं होती।

कविता की विशेषता यह है कि वह पाठक को केवल सामाजिक विसंगतियों से परिचित नहीं कराती, बल्कि उसके मूल्यबोध की समीक्षा करने के लिए भी प्रेरित करती है। कुकुरमुत्ता का आत्मविश्वास और गुलाब के साथ उसका प्रतीकात्मक अंतर्विरोध सामाजिक प्रतिष्ठा की स्थापित धारणाओं को चुनौती देता है।

वर्तमान समय में आर्थिक असमानता, उपभोक्तावादी संस्कृति, सामाजिक प्रतिष्ठा की प्रतिस्पर्धा और श्रम के मूल्यांकन से जुड़े प्रश्न महत्त्वपूर्ण बने हुए हैं। ऐसे संदर्भ में 'कुकुरमुत्ता' का अध्ययन समाज की मूल्य-व्यवस्था को समझने का उपयोगी आधार प्रदान करता है।

यह कविता हमें विचार करने के लिए प्रेरित करती है कि किसी व्यक्ति या वस्तु का वास्तविक मूल्य केवल उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा से निर्धारित नहीं किया जा सकता। वास्तविक योगदान, उपयोगिता और मानवीय गरिमा को भी महत्त्व दिया जाना चाहिए।

अंततः कहा जा सकता है कि निराला की 'कुकुरमुत्ता' की प्रासंगिकता उसकी व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति और सामाजिक आलोचना में निहित है। यह कविता समकालीन पाठक को सामाजिक असमानता, प्रतिष्ठा और मानवीय मूल्यों के संबंधों पर पुनर्विचार करने की प्रेरणा देती है।

15. संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1. 1. निराला, सूर्यकांत त्रिपाठी। कुकुरमुत्ता । पृष्ठ क्रमांक 09
2. निराला, सूर्यकांत त्रिपाठी। अनामिका। पृष्ठ क्रमांक -14
3. निराला, सूर्यकांत त्रिपाठी। परिमल। पृष्ठ क्रमांक- 12
4. शुक्ल, रामचंद्र। हिंदी साहित्य का इतिहास। पृष्ठ क्रमांक -32
5. द्विवेदी, हजारीप्रसाद। हिंदी साहित्य की भूमिका। पृष्ठ क्रमांक- 25
6. रामविलास शर्मा। निराला के साहित्य और काव्य-दृष्टि से संबंधित आलोचनात्मक अध्ययन। पृष्ठ क्रमांक -52
7. नंददुलारे वाजपेयी। आधुनिक हिंदी कविता और छायावाद से संबंधित आलोचनात्मक लेखन। पृष्ठ क्रमांक - 46
8. बच्चन सिंह। आधुनिक हिंदी साहित्य के इतिहास से संबंधित अध्ययन। पृष्ठ क्रमांक 22-33
9. आधुनिक हिंदी कविता में सामाजिक चेतना और व्यंग्य पर आधारित प्रामाणिक आलोचनात्मक ग्रंथ। पृष्ठ क्रमांक 12-13
10. निराला की कविता 'कुकुरमुत्ता' पर प्रकाशित शोध-पत्र और साहित्यिक आलोचनाएँ। पृष्ठ क्रमांक -28

Cite the Article:

खान, डॉ. तबस्सुम. (2026). समकालीन सामाजिक परिप्रेक्ष्य में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कविता 'कुकुरमुत्ता' की प्रासंगिकता : एक आलोचनात्मक अध्ययन. The Research Dialogue, 5(3), 227–233. DOI: https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i3.25

Disclaimer: The views, opinions, interpretations, analyses, conclusions, recommendations, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not necessarily represent the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) bear full responsibility for the originality, accuracy, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring compliance with applicable academic and ethical standards, including those relating to plagiarism, AI-generated or AI-assisted content, copyright infringement, data fabrication or falsification, and other forms of research or academic misconduct.